दिनांक :- 21-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम :- डॉ फारूक आजम
स्नातक :- द्वितीय खंड कला

विषय :- इतिहास प्रतिष्ठा
इकाई :- दो
पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- अफीम युद्ध (1839, 1856)

1784 में ही राज्यक्षेत्रातीत अधिकार का प्रश्न उठ खड़ा हुआ थी। उसी वर्ष अँग्रेजी जहाज में काम करने वाले एक बन्दूकधारी से एक चीनी दुर्घटनाग्रस्त हुआ। चीनी प्रशासन द्वारा दबाव डालने पर उसे उनके हाथ सौंप दिया गया जिसे गला दबोचकर मार डाला गया। इस पर ब्रिटिश सरकार ने चीन में राज्यक्षेत्रातीत अधिकार प्राप्त करने के लिए लार्ड मैकार्टनी के नेतृत्व में एक दूत-मंडल भेजा। लेकिन मैकार्टनी सफल नहीं रहा। चीनी अधिकारियों द्वारा फौजदारी मामलों को

सुनवाई की अँग्रेज और अमरीकी दोनों अप्रसन्न थे।

(5) तात्कालिक कारण (Immediate cause) - 7 जुलाई 1834 को कुछ नाविकों की पारस्परिक झगड़े में एक चीनी नाविक की मृत्यु हो गई। चीनी अयुक्त लिन ने अँग्रेज व्यापार अधीक्षक इलियट से अपराधी को सौंप देने की माँग की। इलियट ने अपराधी को सौंपने से इन्कार कर दिया। इस प्रश्न को लेकर दोनों पक्षों में तनाव बढ़ गया। चीनी पदाधिकारियों ने अँग्रेजी व्यापारिक संस्थान पर अपना नियंत्रण अधिक कर दिया। यहाँ तक की अँग्रेज व्यापारियों के अपने भोजन की व्यवस्था करना भी कठिन हो गया। विवश होकर उन्हें मकाओं में शरण लेनी पड़ी। यहाँ पर भी चीनी प्रशासन ने उनके प्रवेशों को निषिद्ध घोषित कर दिया। तब अँग्रेज व्यापारियों ने हांगकांग में शरण ली जो उस समय मछुओं की एक छोटी सी बस्ती थी।

उपयुक्त परिस्थितियों में आंग्ल-चीनी युद्ध अनिवार्य हो गया, क्योंकि यह राष्ट्रीय सम्मान का प्रश्न था। इस राष्ट्रीय सम्मान की पृष्ठभूमि में ब्रिटेन का उभरता हुआ, साम्राज्य ताक था। कप्तान इलियट तो प्रारंभ से ही युद्ध के पक्ष में था। एडमिरल जार्ज इलियट और कप्तान इलियट के आदेश पर कैंटन की नाकेबन्दी कर दी गई। ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड पामर्स्टन ने कप्तान इलियट की कार्रवाइयों का समर्थन किया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड 1840 में ब्रिटिश संसद ने चीन के विरुद्ध युद्ध के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। ब्रिटिश सेना को कैंटन पर अधिकार कर लिया। इसने यांग-त्सी नदी के मुहाने पर नाकेबंदी करके चीनी सेना पर आक्रमण किया। इसी समय सर हेनरी पोटिंजर मुख्य ब्रिटिश प्रतिनिधि नियुक्त किया गया। उसने आते ही फौजी चीनी सरकार ने पोटिंजर से संधि-वार्ता प्रारंभ की और युद्ध समाप्त हो गया।

परिणाम :-

प्रथम अफीम युद्ध (1840-1842) के परिणाम अत्यन्त ही

महत्वपूर्ण है। इसने चीन के स्वर्गिक साम्राज्य के उपा
ख्यान की मिट्टी पलीद कर दी। चीन का सारा दर्प ब्रिटिश
साम्राज्यवाद के दर्पण में धूमिल पड़ गया। ब्रिटिश सेना के
आगे चीन को झुकना पड़ा तथा उसे नानकिंग की संधि करनी
पड़ी। सामान्यतः युद्ध के निम्नलिखित परिणाम उल्लेखनीय है

(1) नानकिंग की संधि (Treaty of Nan King) - 29 अगस्त 1842
चीन और ब्रिटेन में समझौता हो गया यह समझौता नानकिंग
की संधि के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि की प्रमुख शर्तें
निम्नलिखित थी।

(क) ब्रिटिश व्यापारियों के लिए चीन के पाँच बन्दरगाह - कैंटन
अमॉय, फूचो, निंगपो एवं शांघाई खोल दिये गये जहाँ
ब्रिटिश सरकार को वाणिज्यदूत नियुक्त करने का अधिकार
मिल गया।

(ख) हांग-कांग का द्वीप सदा के लिए अंग्रेजों को मिल गया।

(ग) विदेशी व्यापार का नियंत्रण करने वाले चीनी व्यापारियों
के संगठन को-हांग को भंग कर दिया गया ताकि

Scanned with CamScanner

ब्रिटिश व्यापारियों को चीनी व्यापारियों से सीधे क्रय-विक्रय का अधिकार दे दिया गया।

(घ) चीन में आयात-निर्यात के सीमा शुल्क की दरें निश्चित कर दी गई। पाँच प्रतिशत (मूल्यानुसार) तट-कर निर्धारित किया गया।

(ङ) चीन ने दो करोड़ दस लाख डालर देना मान लिया। इसमें आठ लाख डालर तो कैंटन में अफीम जब्त करने के बदले क्षतिपूर्ति, तीस लाख डालर हांग व्यापारियों के पास बकाया तथा एक करोड़ बीस लाख डालर युद्ध क्षतिपूर्ति थी।

(च) यह प्रबंध मान लिया गया कि मुख्य ब्रिटिश प्रतिनिधि और चीनी अधिकारियों के बीच पत्र-व्यवहार को, प्रार्थना पत्र न कह कर संदेश पत्र कहा जाएगा।

(छ) यह मान लिया गया कि मुख्य ब्रिटिश प्रतिनिधि और चीनी अधिकारियों के बीच पत्र-व्यवहार को प्रार्थना-पत्र न कहकर सन्देश पत्र कहा जाएगा।

यह मान लिया गया कि अंग्रेजों पर मुकदमे उन्हें के कानून

अनुसार और उन्ही की अदालत में चलेगी।

(ज) यह भी निश्चित हुआ कि जो सुविधाए अन्य विदेशियों को दी जाएँगी, वे सुविधाएँ अँग्रेजो को स्वतः प्राप्त होगी नानकिंग की सन्धि चीन के लिए अत्यंत अपमानजनक साबित हुई। इसने मंचू सरकार की कमजोरी स्पष्ट कर दी। यह भी स्पष्ट हो गया कि ब्रिटिश-साम्राज्यवाद का विरोध आसान नही है। जिस अफीम व्यापार को बन्द करने के लिए युद्ध शुरू हुआ। वह ज्यों का-त्यों बना रहा।

(2) बोग की संधि - 8 अक्टूबर, 1843 को बोग नामक स्थान पर यह संधि की गई। इसके अनुसार ब्रिटेन ने चीन से अपने लिए सर्वाधिक प्रिय देश (Most Favoured National) का सिद्धान्त स्वीकार करवा लिया। इससे चीन में ब्रिटेन की स्थिति अधिक सुदृढ़ हो गई। इसमें राज्यक्षेत्रातीत क्षेत्रातीत-अधिकार की भी व्यवस्था की गई थी।

Scanned with CamScanner

इसके अनुसार ब्रिटिश नागरिकों को चीन में ब्रिटिश विधि-प्रणाली द्वारा ही दंडित किया जा सकता था।

(3) अन्य देशों के साथ संधियाँ (Treaties with other countries)

अफीम युद्ध में चीन औंधे मुँह गिरा था, अतः अमरीका और फ्रांस उसे आने की अपेक्षा उसे और रौंदने लगे।

अमरीकी कप्तान लारेंस कनी ने कैंटन के गवर्नर के कुंग (Ke Kung) को अमरीकी के साथ संधि करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस प्रस्ताव को चीनी सम्राट के समक्ष प्रस्तुत किया गया। जिसने इसे स्वीकार कर लिया। अमरीका की ओर तत्कालीन राष्ट्रपति टाइलर ने केलेब कशिंग को चीन का पहला मंत्री बनाकर संधि करने के लिए चीन भेजा। 24 फरवरी 1844 को कशिंग मकाओ पहुंच गया। उसने यह स्पष्ट बताया कि चीन के प्रति अमरीका किसी प्रकार की आक्रमक नीति अपनाना नहीं चाहता है।

Scanned with CamScanner